# शिव सन्देश

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

# निराकार परमात्मा

अनन्त गुणों व शक्तियों के सागर

# निराकार परमात्मा

परमपिता परमात्मा का दिव्य-रूप ज्योतिर्बिन्दु समान है। विश्व कल्याणकारी होने के कारण उनका नाम 'शिव' है। दुःखहर्ता और सुखकर्ता परमात्मा शिव अनन्त गुणों और शक्तियों के सागर हैं। वर्तमान समय पुरुषोत्तम संगमयुग में करुणामय परमात्मा साकार मनुष्य तन में अवतरित होकर विश्व-परिवर्तन का सर्वश्रेष्ठ कार्य कर रहे हैं।

# सर्व आत्माओं के परमपिता निराकार ज्योतिस्वरूप

## सभी धर्मों में मान्य

# सर्व आत्माओं के परमपिता

हर धर्म स्थापक और सभी धर्मों के अनुयायी परमात्मा के निराकार ज्योतिस्वरूप को अवश्य मान्यता देते हैं। ईसा मसीह 'God is Light' कहकर और गुरु नानक देव ने 'एक ओंकार निराकार' कहकर परमात्मा को निराकार और ज्योतिस्वरूप माना है। शिवलिंग निराकार ज्योतिस्वरूप परमात्मा की ही यादगार है जो भारत के कोने-कोने में तथा भिन्न-भिन्न देशों में पाई जाती है।

# तीन लोक

## साकारी-आकारी-निराकारी धाम

# तीन लोक

आत्मा और परमात्मा के यथार्थ निवास की पहचान तीन लोक के ज्ञान द्वारा होती है। (१) साकार मनुष्य लोक - जिसमें पाँच तत्वों का शरीर धारण कर आत्मायें कर्म करती हैं और उसके फलस्वरूप सुख व दुःख भोगती हैं। (२) सूक्ष्म देव लोक - सूर्य, चन्द्रमा एवं तारागण से पार सूक्ष्म लोक में चारों ओर दिव्य प्रकाश है, जहाँ ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर के धाम हैं। (३) ब्रह्मलोक - मुक्तिधाम, शान्तिधाम, परमधाम के नाम से प्रसिद्ध इस लोक में सर्वत्र सुनहरा लाल प्रकाश विकीर्ण है। यही आत्माओं और परमात्मा का असली निवास स्थान है।

# परमात्मा की अदभुत शक्ति

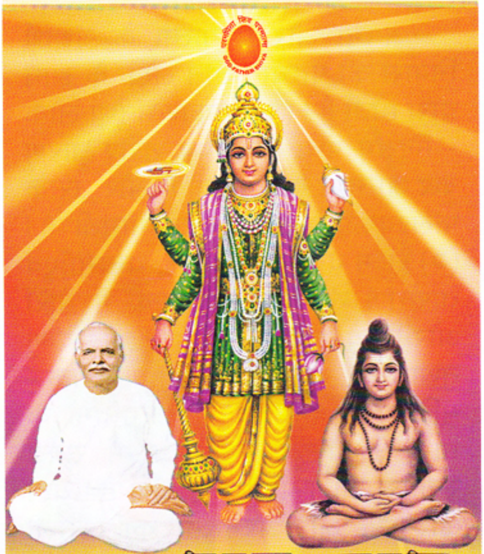

ब्रह्मा द्वारा स्थापना
CREATION OF RIGHTEOUS WORLD THROUGH **BRAHMA**

विष्णु द्वारा पालना
SUSTENANCE OF RIGHTEOUS WORLD THROUGH **VISHNU**

शकर द्वारा विनाश
DESTRUCTION OF OLD VICIOUS WORLD THROUGH **SHANKAR**

# परमात्मा के तीन दिव्य कर्त्तव्य

परमात्मा को अंग्रेजी में GOD कहते हैं। G माना 'जनरेटर' अर्थात् प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा नई सृष्टि की स्थापना, O माना 'ओपरेटर' अर्थात् विष्णु द्वारा नई सृष्टि की पालना और D का अर्थ 'डिस्ट्रक्टर' अर्थात् शंकर द्वारा पुरानी सृष्टि का विनाश। अपने इन्हीं तीन दिव्य कर्त्तव्यों के फलस्वरूप निराकार ज्योतिर्बिन्दु परमपिता शिव परमात्मा को त्रिमूर्ति शिव भी कहा जाता है।

# शिव और शंकर भिन्न हैं

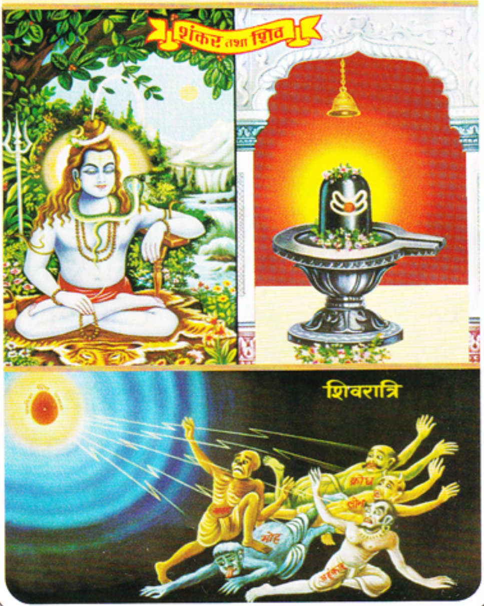


# शिव और शंकर में अन्तर

शिव अर्थात् कल्याणकारी, निराकार ज्योतिर्बिन्दु परमपिता परमात्मा जो सृष्टि के रचयिता हैं, जबकि शंकर परमात्मा शिव की रचना हैं। शंकर आकारी हैं तथा उन्हें संहारकारी देवता कहा जाता है। वे सूक्ष्मलोक में शंकरपुरी में निवास करते हैं, जबकि परमपिता परमात्मा शिव परमधाम निवासी हैं। इस प्रकार शिव और शंकर दोनों भिन्न हैं।

# सृष्टि-चक्र
# WORLD DRAMA WHEEL.

**। एक अद्भुत रहस्य ।**

**आप यहां पहली बार ही नहीं आए , आप 5000 वर्ष पूर्व भी इसी स्थान पर , इसी समय इस प्रकार से आए थे , अब आए हैं और हर 5000 वर्ष पशचात् आते रहेंगे क्योंकि इस सृष्टि रुपी नाटक की हर 5000 वर्ष पश्चात् हू बहू पुनरावृति होती है।**

# सृष्टि-चक्र

सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग। सम्पूर्ण कल्प का समय ५००० वर्ष है और हर युग १२५० वर्ष का है। कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के बीच के समय को कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगमयुग कहते हैं। इस युग में सर्वशक्तिवान परमात्मा स्वयं इस धरा पर अवतरित होकर सृष्टि के नवनिर्माण का कार्य पुनः करते हैं।

# ईश्वरीय निमन्त्रण

शिवभगवानुवाच - "हे आत्माओं, हे मेरे प्यारे बच्चों, अब आप स्वयं को पहचानो एवं मुझ अविनाशी परमपिता को जानो और इस कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगमयुग के समय को भी पहचानो। अनेक जन्मों की भक्ति द्वारा आपने मुझे ही सदा याद किया है। मैं ही दुःखहर्ता, सुखकर्ता, सर्वशक्तिवान, सर्व आत्माओं का पिता स्वयं इस सृष्टि पर अवतरित हुआ हूँ। अब सृष्टि नाटक का अन्त अति समीप है। अतः अब जागृत होकर, ज्ञान मार्ग को अपनाकर सतयुगी सुखमय सृष्टि का अपना जन्म-सिद्ध अधिकार प्राप्त करो।"

यह ईश्वरीय सत्य ज्ञान पाने एवं सहज राजयोग की विधि जान जीवन को कमल पुष्प समान न्यारा, प्यारा और पवित्र बनाने के लिए अपने स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर पधारने का आपको हार्दिक ईश्वरीय निमन्त्रण है।

**याद रखें - "अभी नहीं तो कभी नहीं"।**

❖ सभी राजयोग शिक्षाकेन्द्रों पर प्रातः 7 से 10 बजे और सायं 5 से 8 बजे के बीच लगभग एक घंटा तक ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग मेडिटेशन की शिक्षा निःशुल्क प्रदान की जाती है।

## LOCAL CENTER

World Headquarters : Mount Abu, Rajasthan, India
Website : www.brahmakumaris.com • www.bkwsu.org